



Gunvant Thakkar

25 Mar 1961

01:05 PM

Ahmedabad

Model: Web-KundliPhal

Order No: 120337301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 25/03/1961
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: 13:05:00 घंटे
इष्ट _____: 16:04:20 घटी
स्थान _____: Ahmedabad
राज्य _____: Gujarat
देश _____: India

अक्षांश _____: 23:03:00 उत्तर
रेखांश _____: 72:40:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:39:20 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 12:25:40 घंटे
वेलान्तर _____: -00:06:06 घंटे
साम्पातिक काल _____: 00:35:46 घंटे
सूर्योदय _____: 06:39:16 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:51:58 घंटे
दिनमान _____: 12:12:42 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वसन्त
सूर्य के अंश _____: 11:06:39 मीन
लग्न के अंश _____: 24:12:29 मिथुन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मिथुन - बुध
राशि-स्वामी _____: मिथुन - बुध
नक्षत्र-चरण _____: पुनर्वसु - 2
नक्षत्र स्वामी _____: गुरु
योग _____: शोभन
करण _____: कौलव
गण _____: देव
योनि _____: मार्जार
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मार्जार
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: को-कोमल
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मेष

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1883	चैत्र	4
पंजाबी	संवत : 2017	चैत्र	12
बंगाली	सन् : 1367	चैत्र	11
तमिल	संवत : 2017	पंगुनी	12
केरल	कोल्लम : 1136	मीनम	12
नेपाली	संवत : 2017	चैत्र	12
चैत्रादि	संवत : 2018	चैत्र	शुक्ल 9
कार्तिकादि	संवत : 2018	चैत्र	शुक्ल 9

पंचांग

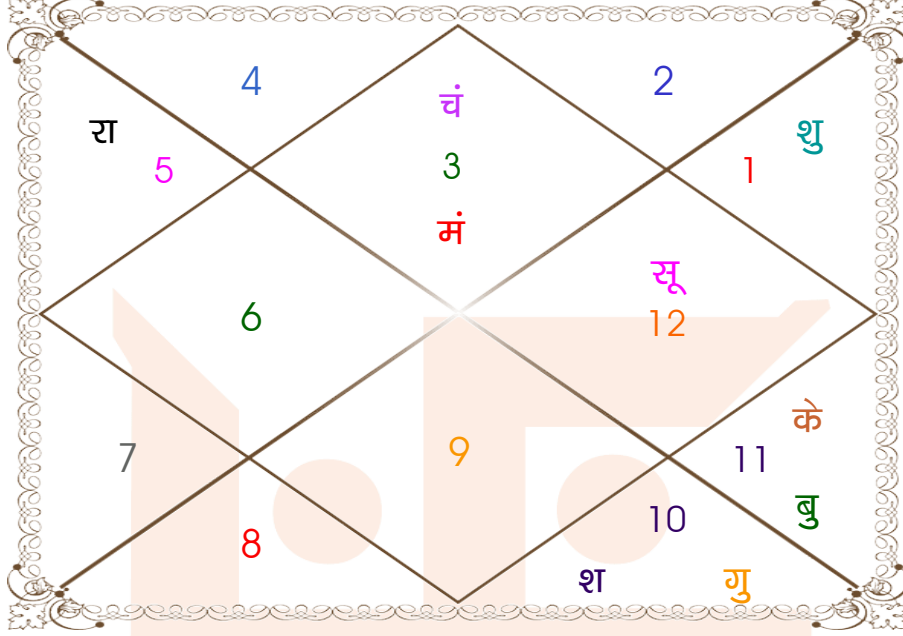
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 9
तिथि समाप्ति काल _____ : 23:49:11
जन्म तिथि _____ : 9
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पुनर्वसु
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 07:29:36 घंटे
जन्म योग _____ : पुनर्वसु
सूर्योदय कालीन योग _____ : शोभन
योग समाप्ति काल _____ : 15:30:55 घंटे
जन्म योग _____ : शोभन
सूर्योदय कालीन करण _____ : बालव
करण समाप्ति काल _____ : 10:33:47 घंटे
जन्म करण _____ : कौलव
भयात _____ : 21:28:07
भभोग _____ : 67:29:36
भोग्य दशा काल _____ : गुरु 10 वर्ष 10 मा 22 दि

घात चक्र

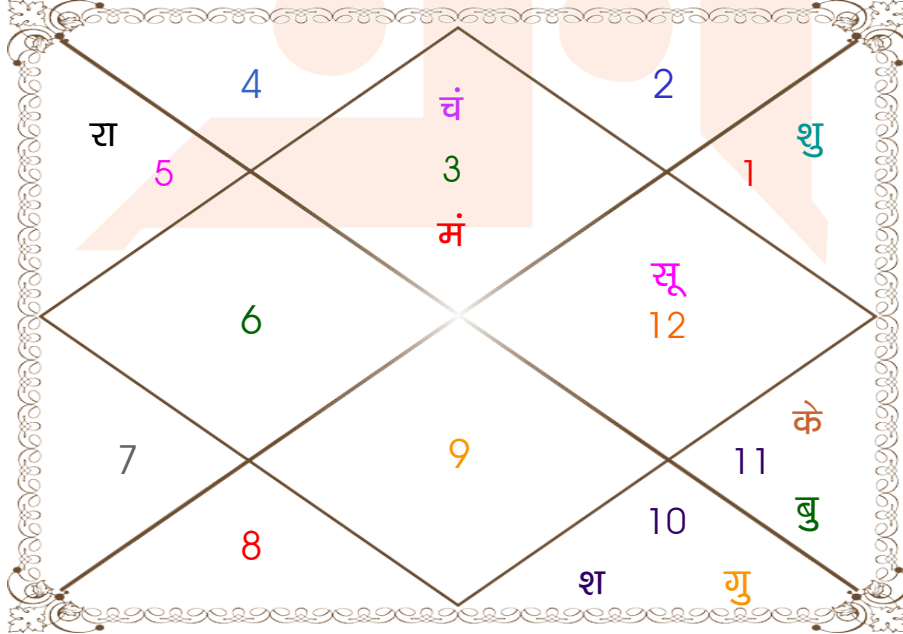
मास _____ : आषाढ़
तिथि _____ : 2-7-12
दिन _____ : सोमवार
नक्षत्र _____ : स्वाति
योग _____ : परिघ
करण _____ : कौलव
प्रहर _____ : 3
वर्ग _____ : मूषक
लग्न _____ : कर्क
सूर्य _____ : मीन
चन्द्र _____ : कुम्भ
मंगल _____ : मेष
बुध _____ : मकर
गुरु _____ : वृष
शुक्र _____ : मिथुन
शनि _____ : कुम्भ
राहु _____ : कर्क

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली



चन्द्र कुंडली



Ankijotish Insights

Hyderabad Telangana India

7995233535

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

सू	शु	मं ल चं
के बु		
श गु		रा

लग्न कुंडली

मं चं ल	शु	सू के बु
		श गु
रा		

विंशोत्तरी गुरु 10वर्ष 10मा 22दि गुरु

25/03/1961

16/02/2076

गुरु	16/02/1972
शनि	15/02/1991
बुध	16/02/2008
केतु	15/02/2015
शुक्र	15/02/2035
सूर्य	15/02/2041
चन्द्र	15/02/2051
मंगल	15/02/2058
राहु	16/02/2076

योगिनी पिंगला 1वर्ष 4मा 10दि संकटा

05/08/2023

05/08/2031

संकटा	15/05/2025
मंगला	04/08/2025
पिंगला	14/01/2026
धान्या	14/09/2026
भ्रामरी	05/08/2027
भद्रिका	14/09/2028
उल्का	14/01/2030
सिद्धा	05/08/2031

Ankijotish Insights

Hyderabad Telangana India

7995233535

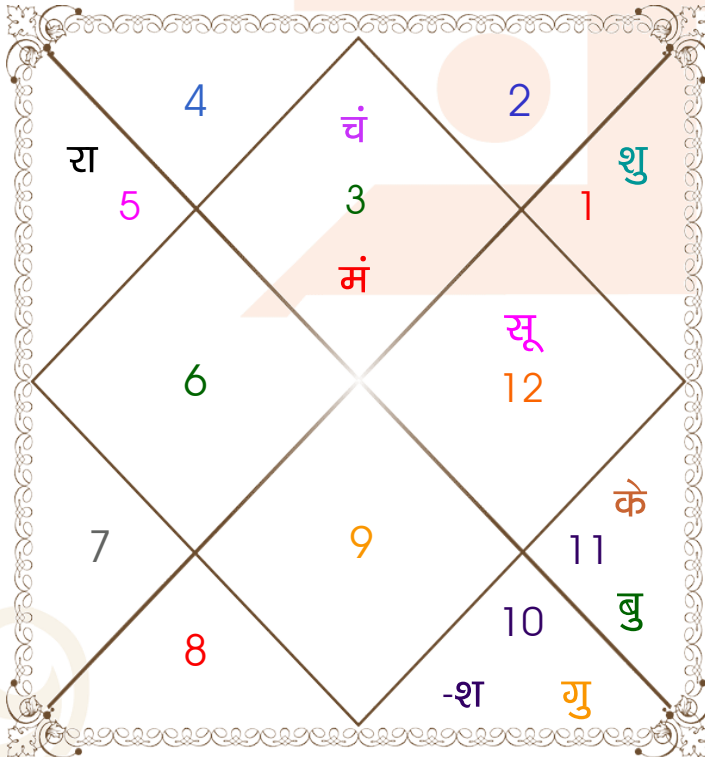
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मिथु	24:12:29	317:24:55	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	बुध	---
सूर्य			मीन	11:06:39	00:59:26	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	चंद्र	मित्र राशि
चंद्र			मिथु	24:15:13	11:52:05	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	बुध	मित्र राशि
मंगल			मिथु	17:24:54	00:23:24	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	शुक्र	शत्रु राशि
बुध			कुंभ	13:50:48	01:10:41	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	बुध	सम राशि
गुरु			मक	08:24:02	00:09:46	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	नीच राशि
शुक्र	व		मेष	05:22:11	00:11:08	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	मंगल	सम राशि
शनि			मक	04:54:58	00:04:09	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	स्वराशि
राहु			सिंह	12:36:30	00:01:31	मघा	4	10	सूर्य	केतु	बुध	शत्रु राशि
केतु			कुंभ	12:36:30	00:01:31	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	बुध	शत्रु राशि
हर्ष	व		कर्क	28:52:06	00:01:44	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	शनि	---
नेप	व		तुला	17:32:33	00:01:14	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	सूर्य	---
प्लूटो	व		सिंह	12:52:02	00:01:20	मघा	4	10	सूर्य	केतु	बुध	---
दशम भाव			मीन	16:24:59	--	उ०भाद्रपद	--	26	गुरु	शनि	गुरु	--

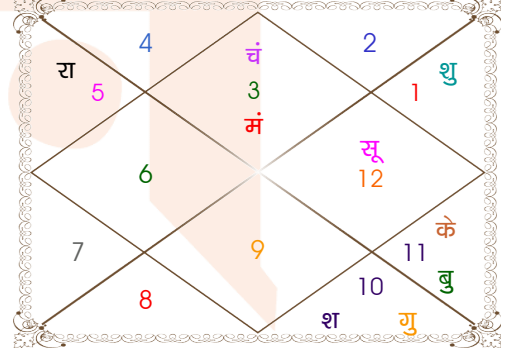
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:18:48

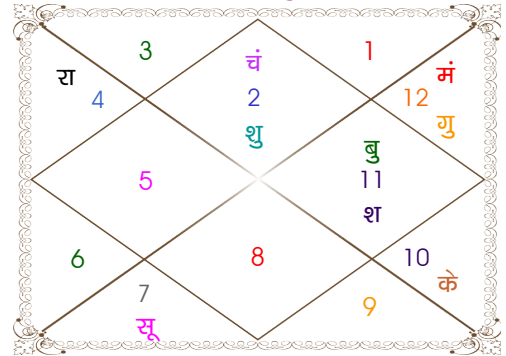
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Ankkyotish Insights

Hyderabad Telangana India

7995233535

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मिथुन 07:54:34	मिथुन 24:12:29
2	कर्क 07:54:34	कर्क 21:36:39
3	सिंह 05:18:44	सिंह 19:00:49
4	कन्या 02:42:54	कन्या 16:24:59
5	तुला 02:42:54	तुला 19:00:49
6	वृश्चिक 05:18:44	वृश्चिक 21:36:39
7	धनु 07:54:34	धनु 24:12:29
8	मकर 07:54:34	मकर 21:36:39
9	कुम्भ 05:18:44	कुम्भ 19:00:49
10	मीन 02:42:54	मीन 16:24:59
11	मेष 02:42:54	मेष 19:00:49
12	वृष 05:18:44	वृष 21:36:39

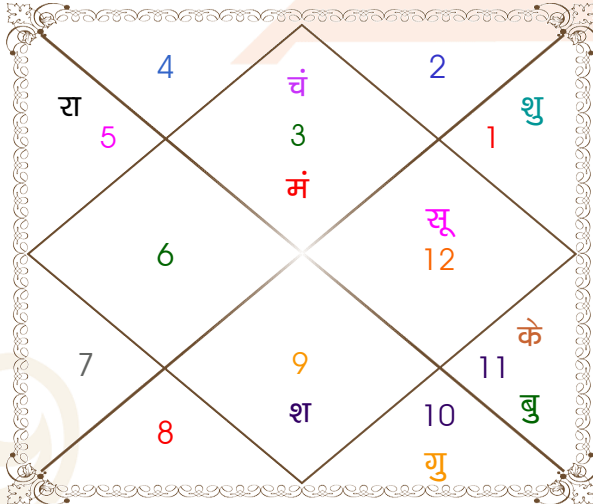
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मिथुन	24:12:29
2	कर्क	18:14:58
3	सिंह	15:11:40
4	कन्या	16:24:59
5	तुला	20:24:58
6	वृश्चिक	23:37:36
7	धनु	24:12:29
8	मकर	18:14:58
9	कुम्भ	15:11:40
10	मीन	16:24:59
11	मेष	20:24:58
12	वृष	23:37:36

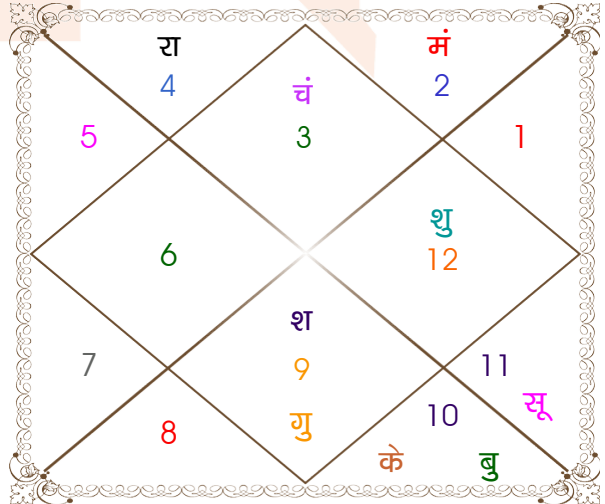
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Ankijotish Insights

Hyderabad Telangana India

7995233535

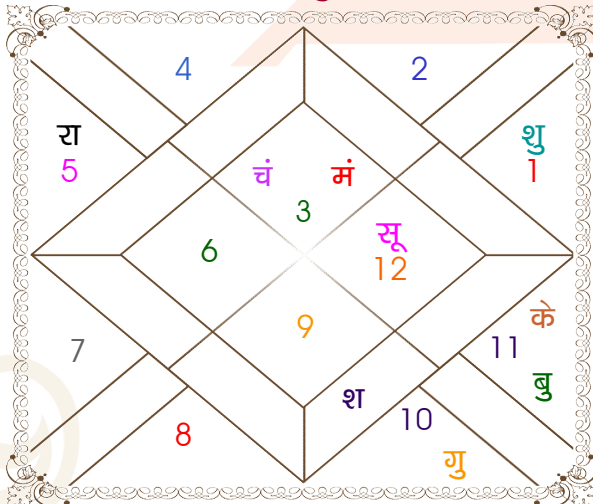
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----	
	चर	स्थिर	बालादि दीप्तादि शयनादि रश्मि ग्रह बल
सूर्य	मातृ	पितृ	वृद्ध मुदित नृत्यलिप्सा 11.19 65 %
चंद्र	आत्मा	मातृ	मृत मुदित आगमन 6.44 78 %
मंगल	अमात्य	भातृ	युवा खल उपवेशन 0.45 34 %
बुध	भातृ	ज्ञाति	युवा शान्त उपवेशन 1.04 39 %
गुरु	पुत्र	धन	वृद्ध भीत गमन 0.07 63 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	बाल निपीदित उपवेशन 9.15 69 %
शनि	कलत्र	आयु	मृत स्वस्थ आगम 4.38 39 %
राहु	---	ज्ञान	युवा खल नृत्यलिप्सा 0.00 46 %
केतु	---	मोक्ष	युवा खल उपवेशन 0.00 46 %
कुल			32.72

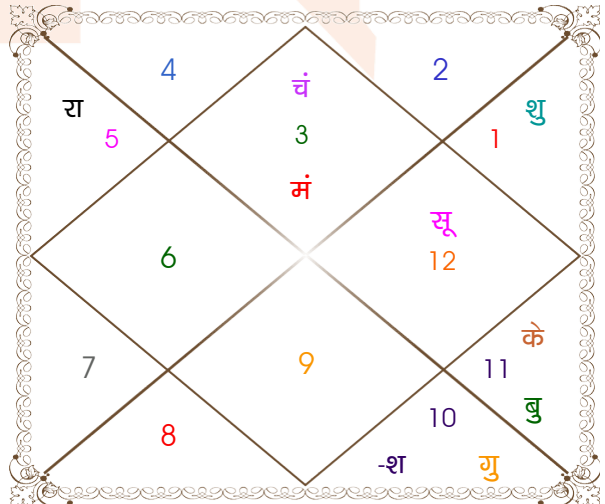
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा

चलित कुंडली



लग्न-चलित



Ankijyotish Insights

Hyderabad Telangana India

7995233535

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 10 वर्ष 10 मास 22 दिन

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
25/03/1961	16/02/1972	15/02/1991	16/02/2008	15/02/2015
16/02/1972	15/02/1991	16/02/2008	15/02/2015	15/02/2035
00/00/0000	शनि 19/02/1975	बुध 14/07/1993	केतु 14/07/2008	शुक्र 17/06/2018
25/03/1961	बुध 29/10/1977	केतु 11/07/1994	शुक्र 13/09/2009	सूर्य 17/06/2019
बुध 22/01/1963	केतु 07/12/1978	शुक्र 11/05/1997	सूर्य 19/01/2010	चंद्र 15/02/2021
केतु 29/12/1963	शुक्र 06/02/1982	सूर्य 18/03/1998	चंद्र 20/08/2010	मंगल 17/04/2022
शुक्र 29/08/1966	सूर्य 19/01/1983	चंद्र 17/08/1999	मंगल 16/01/2011	राहु 17/04/2025
सूर्य 17/06/1967	चंद्र 19/08/1984	मंगल 13/08/2000	राहु 04/02/2012	गुरु 17/12/2027
चंद्र 16/10/1968	मंगल 28/09/1985	राहु 03/03/2003	गुरु 09/01/2013	शनि 15/02/2031
मंगल 22/09/1969	राहु 04/08/1988	गुरु 08/06/2005	शनि 18/02/2014	बुध 16/12/2033
राहु 16/02/1972	गुरु 15/02/1991	शनि 16/02/2008	बुध 15/02/2015	केतु 15/02/2035
सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
15/02/2035	15/02/2041	15/02/2051	15/02/2058	16/02/2076
15/02/2041	15/02/2051	15/02/2058	16/02/2076	00/00/0000
सूर्य 05/06/2035	चंद्र 16/12/2041	मंगल 15/07/2051	राहु 28/10/2060	गुरु 05/04/2078
चंद्र 05/12/2035	मंगल 17/07/2042	राहु 01/08/2052	गुरु 24/03/2063	शनि 16/10/2080
मंगल 11/04/2036	राहु 16/01/2044	गुरु 08/07/2053	शनि 28/01/2066	बुध 25/03/2081
राहु 05/03/2037	गुरु 17/05/2045	शनि 17/08/2054	बुध 16/08/2068	00/00/0000
गुरु 22/12/2037	शनि 17/12/2046	बुध 14/08/2055	केतु 04/09/2069	00/00/0000
शनि 04/12/2038	बुध 17/05/2048	केतु 10/01/2056	शुक्र 04/09/2072	00/00/0000
बुध 11/10/2039	केतु 16/12/2048	शुक्र 11/03/2057	सूर्य 29/07/2073	00/00/0000
केतु 16/02/2040	शुक्र 17/08/2050	सूर्य 17/07/2057	चंद्र 28/01/2075	00/00/0000
शुक्र 15/02/2041	सूर्य 15/02/2051	चंद्र 15/02/2058	मंगल 16/02/2076	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 10 वर्ष 10 मा 28 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - गुरु 17/04/2025 17/12/2027	शुक्र - शनि 17/12/2027 15/02/2031	शुक्र - बुध 15/02/2031 16/12/2033	शुक्र - केतु 16/12/2033 15/02/2035	सूर्य - सूर्य 15/02/2035 05/06/2035
गुरु 25/08/2025 शनि 26/01/2026 बुध 13/06/2026 केतु 09/08/2026 शुक्र 18/01/2027 सूर्य 08/03/2027 चंद्र 28/05/2027 मंगल 24/07/2027 राहु 17/12/2027	शनि 17/06/2028 बुध 28/11/2028 केतु 03/02/2029 शुक्र 15/08/2029 सूर्य 12/10/2029 चंद्र 16/01/2030 मंगल 25/03/2030 राहु 14/09/2030 गुरु 15/02/2031	बुध 12/07/2031 केतु 10/09/2031 शुक्र 01/03/2032 सूर्य 22/04/2032 चंद्र 17/07/2032 मंगल 15/09/2032 राहु 18/02/2033 गुरु 05/07/2033 शनि 16/12/2033	केतु 10/01/2034 शुक्र 22/03/2034 सूर्य 13/04/2034 चंद्र 18/05/2034 मंगल 12/06/2034 राहु 15/08/2034 गुरु 11/10/2034 शनि 17/12/2034 बुध 15/02/2035	सूर्य 21/02/2035 चंद्र 02/03/2035 मंगल 08/03/2035 राहु 25/03/2035 गुरु 09/04/2035 शनि 26/04/2035 बुध 11/05/2035 केतु 18/05/2035 शुक्र 05/06/2035
सूर्य - चंद्र 05/06/2035 05/12/2035	सूर्य - मंगल 05/12/2035 11/04/2036	सूर्य - राहु 11/04/2036 05/03/2037	सूर्य - गुरु 05/03/2037 22/12/2037	सूर्य - शनि 22/12/2037 04/12/2038
चंद्र 20/06/2035 मंगल 01/07/2035 राहु 28/07/2035 गुरु 22/08/2035 शनि 20/09/2035 बुध 15/10/2035 केतु 26/10/2035 शुक्र 26/11/2035 सूर्य 05/12/2035	मंगल 12/12/2035 राहु 31/12/2035 गुरु 17/01/2036 शनि 07/02/2036 बुध 25/02/2036 केतु 03/03/2036 शुक्र 24/03/2036 सूर्य 31/03/2036 चंद्र 11/04/2036	राहु 30/05/2036 गुरु 13/07/2036 शनि 03/09/2036 बुध 19/10/2036 केतु 07/11/2036 शुक्र 01/01/2037 सूर्य 18/01/2037 चंद्र 14/02/2037 मंगल 05/03/2037	गुरु 13/04/2037 शनि 29/05/2037 बुध 10/07/2037 केतु 27/07/2037 शुक्र 14/09/2037 सूर्य 28/09/2037 चंद्र 23/10/2037 मंगल 09/11/2037 राहु 22/12/2037	शनि 15/02/2038 बुध 06/04/2038 केतु 26/04/2038 शुक्र 23/06/2038 सूर्य 10/07/2038 चंद्र 08/08/2038 मंगल 28/08/2038 राहु 19/10/2038 गुरु 04/12/2038
सूर्य - बुध 04/12/2038 11/10/2039	सूर्य - केतु 11/10/2039 16/02/2040	सूर्य - शुक्र 16/02/2040 15/02/2041	चंद्र - चंद्र 15/02/2041 16/12/2041	चंद्र - मंगल 16/12/2041 17/07/2042
बुध 17/01/2039 केतु 05/02/2039 शुक्र 28/03/2039 सूर्य 13/04/2039 चंद्र 09/05/2039 मंगल 27/05/2039 राहु 12/07/2039 गुरु 23/08/2039 शनि 11/10/2039	केतु 18/10/2039 शुक्र 09/11/2039 सूर्य 15/11/2039 चंद्र 26/11/2039 मंगल 03/12/2039 राहु 22/12/2039 गुरु 08/01/2040 शनि 29/01/2040 बुध 16/02/2040	शुक्र 17/04/2040 सूर्य 05/05/2040 चंद्र 04/06/2040 मंगल 26/06/2040 राहु 19/08/2040 गुरु 07/10/2040 शनि 04/12/2040 बुध 25/01/2041 केतु 15/02/2041	चंद्र 12/03/2041 मंगल 30/03/2041 राहु 15/05/2041 गुरु 24/06/2041 शनि 12/08/2041 बुध 24/09/2041 केतु 11/10/2041 शुक्र 01/12/2041 सूर्य 16/12/2041	मंगल 29/12/2041 राहु 30/01/2042 गुरु 27/02/2042 शनि 02/04/2042 बुध 02/05/2042 केतु 14/05/2042 शुक्र 19/06/2042 सूर्य 30/06/2042 चंद्र 17/07/2042

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - राहु	चंद्र - गुरु	चंद्र - शनि	चंद्र - बुध	चंद्र - केतु
17/07/2042	16/01/2044	17/05/2045	17/12/2046	17/05/2048
16/01/2044	17/05/2045	17/12/2046	17/05/2048	16/12/2048
राहु 08/10/2042	गुरु 21/03/2044	शनि 17/08/2045	बुध 28/02/2047	केतु 29/05/2048
गुरु 20/12/2042	शनि 06/06/2044	बुध 07/11/2045	केतु 30/03/2047	शुक्र 04/07/2048
शनि 16/03/2043	बुध 14/08/2044	केतु 11/12/2045	शुक्र 24/06/2047	सूर्य 15/07/2048
बुध 02/06/2043	केतु 12/09/2044	शुक्र 17/03/2046	सूर्य 20/07/2047	चंद्र 01/08/2048
केतु 04/07/2043	शुक्र 02/12/2044	सूर्य 15/04/2046	चंद्र 01/09/2047	मंगल 14/08/2048
शुक्र 03/10/2043	सूर्य 26/12/2044	चंद्र 02/06/2046	मंगल 01/10/2047	राहु 15/09/2048
सूर्य 31/10/2043	चंद्र 05/02/2045	मंगल 06/07/2046	राहु 18/12/2047	गुरु 13/10/2048
चंद्र 15/12/2043	मंगल 05/03/2045	राहु 30/09/2046	गुरु 25/02/2048	शनि 16/11/2048
मंगल 16/01/2044	राहु 17/05/2045	गुरु 17/12/2046	शनि 17/05/2048	बुध 16/12/2048
चंद्र - शुक्र	चंद्र - सूर्य	मंगल - मंगल	मंगल - राहु	मंगल - गुरु
16/12/2048	17/08/2050	15/02/2051	15/07/2051	01/08/2052
17/08/2050	15/02/2051	15/07/2051	01/08/2052	08/07/2053
शुक्र 28/03/2049	सूर्य 26/08/2050	मंगल 24/02/2051	राहु 10/09/2051	गुरु 16/09/2052
सूर्य 27/04/2049	चंद्र 10/09/2050	राहु 19/03/2051	गुरु 31/10/2051	शनि 09/11/2052
चंद्र 17/06/2049	मंगल 21/09/2050	गुरु 07/04/2051	शनि 31/12/2051	बुध 27/12/2052
मंगल 22/07/2049	राहु 18/10/2050	शनि 01/05/2051	बुध 23/02/2052	केतु 16/01/2053
राहु 22/10/2049	गुरु 12/11/2050	बुध 22/05/2051	केतु 17/03/2052	शुक्र 14/03/2053
गुरु 11/01/2050	शनि 11/12/2050	केतु 31/05/2051	शुक्र 20/05/2052	सूर्य 31/03/2053
शनि 17/04/2050	बुध 05/01/2051	शुक्र 25/06/2051	सूर्य 08/06/2052	चंद्र 28/04/2053
बुध 12/07/2050	केतु 16/01/2051	सूर्य 02/07/2051	चंद्र 10/07/2052	मंगल 18/05/2053
केतु 17/08/2050	शुक्र 15/02/2051	चंद्र 15/07/2051	मंगल 01/08/2052	राहु 08/07/2053
मंगल - शनि	मंगल - बुध	मंगल - केतु	मंगल - शुक्र	मंगल - सूर्य
08/07/2053	17/08/2054	14/08/2055	10/01/2056	11/03/2057
17/08/2054	14/08/2055	10/01/2056	11/03/2057	17/07/2057
शनि 10/09/2053	बुध 07/10/2054	केतु 23/08/2055	शुक्र 21/03/2056	सूर्य 18/03/2057
बुध 06/11/2053	केतु 28/10/2054	शुक्र 17/09/2055	सूर्य 12/04/2056	चंद्र 28/03/2057
केतु 30/11/2053	शुक्र 28/12/2054	सूर्य 24/09/2055	चंद्र 17/05/2056	मंगल 05/04/2057
शुक्र 06/02/2054	सूर्य 15/01/2055	चंद्र 06/10/2055	मंगल 11/06/2056	राहु 24/04/2057
सूर्य 26/02/2054	चंद्र 14/02/2055	मंगल 15/10/2055	राहु 14/08/2056	गुरु 11/05/2057
चंद्र 01/04/2054	मंगल 07/03/2055	राहु 07/11/2055	गुरु 10/10/2056	शनि 31/05/2057
मंगल 24/04/2054	राहु 30/04/2055	गुरु 26/11/2055	शनि 16/12/2056	बुध 18/06/2057
राहु 24/06/2054	गुरु 18/06/2055	शनि 20/12/2055	बुध 14/02/2057	केतु 26/06/2057
गुरु 17/08/2054	शनि 14/08/2055	बुध 10/01/2056	केतु 11/03/2057	शुक्र 17/07/2057

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

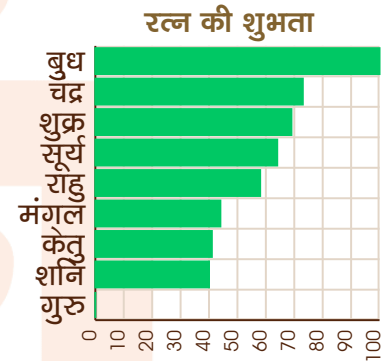
मूलांक	7
भाग्यांक	9
मित्र अंक	2, 3, 6, 7, 9
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	भाग्योदय, स्वास्थ्य, सुख
मोती	चंद्र	73%	स्वास्थ्य, धन
हीरा	शुक्र	69%	धनार्जन, कम खर्च, सन्तति सुख
माणिक्य	सूर्य	64%	व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
गोमेद	राहु	58%	पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
मूंगा	मंगल	44%	रोग, हानि, शत्रु व रोग
लहसुनिया	केतु	41%	नेष्ट भाग्य, दुर्घटना
नीलम	शनि	40%	दुर्घटना, नेष्ट भाग्य
पुखराज	गुरु	0%	दुर्घटना, दाम्पत्य कष्ट, व्यावसायिक हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	16/02/1972	70%	80%	53%	97%	25%	56%	40%	58%	41%
शनि	15/02/1991	52%	61%	19%	100%	0%	75%	57%	64%	16%
बुध	16/02/2008	70%	61%	44%	100%	0%	75%	40%	58%	41%
केतु	15/02/2015	52%	61%	53%	100%	0%	75%	15%	41%	58%
शुक्र	15/02/2035	52%	61%	44%	100%	0%	81%	51%	64%	52%
सूर्य	15/02/2041	77%	80%	53%	100%	12%	56%	15%	41%	16%
चंद्र	15/02/2051	70%	86%	44%	100%	0%	69%	40%	41%	16%
मंगल	15/02/2058	70%	80%	59%	97%	12%	69%	40%	41%	52%
राहु	16/02/2076	52%	61%	19%	100%	0%	75%	51%	70%	16%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए पन्ना रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है।

पन्ना आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

इसे धारण करने से आपके जीवन में विशेष ऊर्जा का प्रवाह होगा। आपकी प्रतिभा बढ़ेगी। इस रत्न को धारण करने से आपके रुके हुए कार्य बन सकते हैं। स्वास्थ्य व सुख सम्पत्ति का लाभ मिल सकता है। आपको कार्य करने पर जो श्रेय नहीं मिल पाता है वह प्राप्त होने लगेगा। इस रत्न को धारण करने से आपको कुछ ही समय में सुख की अनुभूति होगी। अतः यह रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के जीवन पर्यन्त धारण करें तो लाभ होगा।

आपके लिए मोती, हीरा, माणिक्य एवं गोमेद रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम हैं। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मूंगा, लहसुनिया व नीलम रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

पुखराज पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध नवम भाव में स्थित है। बुध रत्न पन्ना आपको धर्मात्मा और भाग्यशाली बनाएगा। रत्न की शुभता से आप सदाचारी, धर्म को जानने वाले और बुद्धिमान

व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपको अपने धर्म भाव पर अडिग रखेगा। पन्ना रत्न तीर्थ यात्रा और धार्मिक कार्यों जैसे यज्ञ आदि में आपकी अच्छी रुचि बनाएगा। बुद्धि प्रयोग से आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। यह रत्न ज्ञान, धन और यश से उज्ज्वल बनाएगा। बुध रत्न पन्ना आपके ज्ञान और बुद्धि को बढ़ायेगा। यह रत्न आपको वक्ता, संगीतज्ञ, संपादक, लेखक या ज्योतिषी बनने के गुण दे सकता है।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में बुध लग्नेश एवं चतुर्थेश होते हैं। लग्नेश बुध का रत्न पन्ना आपके लिए जीवन रत्न के समान कार्य करेगा। पन्ना रत्न आपको उत्तम स्वास्थ्य, बौद्धिक योग्यता दे सकता है। पन्ना रत्न शुभता से आपके स्वास्थ्य सुख में वृद्धि होगी। बुध आपके लिए चतुर्थेश है इसलिए पन्ना रत्न धारण करने से मातृ पक्ष एवं भू-संपति पक्ष बलवान हो सकता है। यह रत्न आपको विनोदी, बुद्धिमान एवं गणितीय कौशल को भी बढ़ायेगा। पन्ना रत्न की शुभता से आप दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता दे सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न ३ रत्ती का कम से कम, अन्यथा ६ रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्रमा प्रथम भाव में स्थित है। इसलिए आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। चंद्र रत्न मोती धारण करने से आपके अपनी माता से संबंध मजबूत होंगे। मोती रत्न आपको मानसिक शांति देगा। इसके अलावा मोती रत्न आपको व्यवसायिक विवेकशीलता देकर आपके धन प्रवाह को अनुकूल बनाये रखेगा। सप्तम भाव में स्थित तुला राशि पर चन्द्र की दृष्टि होने के कारण आपका जीवनसाथी गुणवान, कला प्रेमी और कलाप्रेमी होगा। साथ ही यह मोती रत्न आपके वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाये रखने में सहयोग करेगा।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में चंद्र दूसरे भाव के स्वामी है। चंद्र लग्नेश बुध का मित्र भी है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण कर आप चंद्र शुभता प्राप्त कर सकते हैं। मोती रत्न आपको शारीरिक बल तथा मानसिक शक्तियों द्वारा धन व कुटुम्ब से सुखी रख सकता है। मोती रत्न की शुभता से आप धनी, सुखी एवं सम्मानित व्यक्ति बन सकते हैं। मोती चंद्र द्वितीयेश का रत्न होने के कारण आपको सुन्दर व सुशील जीवन साथी, दांपत्य जीवन में मधुरता देगा। इसके साथ ही इस रत्न को आप दैनिक व्यवसाय में सफलता के लिए भी धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौ माय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र एकादश भाव में स्थित है। शुक्र ग्रह की पूर्ण शुभता प्राप्त करने के लिए आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको उदार, सदाचार संपन्न, सुशील और परोपकारी बनाएगा। हीरा रत्न से आप अपने वाकचातुर्य के कारण प्रसिद्ध होंगे। अनेक वाहनों का सुख आपको यह रत्न दे सकता है। शुक्र रत्न हीरे की शुभता आपको समृद्धि और सम्पन्नता देगी। इस रत्न प्रभाव से नियमित रूप से आपके पास धनागमन होता रहेगा और दिनों दिन धनवृद्धि होती जाएगी।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में शुक्र पंचमेश एवं द्वादशेश है। शुक्र लग्नेश बुध के मित्र भी है। त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण शुभ ग्रह है। शुक्र ग्रह की शुभता को बढ़ाने के लिए आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न आपको संतान से सुखी, विद्वान बना सकता है। हीरा रत्न प्रभाव से आप को विदेश जाने के अवसर, व्ययों पर नियंत्रण लगायें रखने में सफल हो सकते हैं। शुक्र रत्न हीरे से आप भोगविलास के आदी नहीं होंगे। यह रत्न आपके दांपत्य जीवन को सुखमय बनाए रखने में सहयोगी हो सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा १ रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य दशम भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आपको बुद्धिमान, विद्वान और प्रसिद्ध बनाएगा। इसकी शुभता से आप आत्मविश्वास से भरे हुए आर्थिक रूप से सुदृढ़ व्यक्ति होंगे। रत्न शक्तियां आपको कार्यक्षेत्र में अधिकारिक शक्तियां प्राप्त करने में सहयोग करेंगी। आपको सरकारी क्षेत्र में नौकरी प्राप्त हो सकती है। आजीविका क्षेत्र में भी आपको उच्चाधिकारियों का सुख-सहयोग सहजता से प्राप्त होगा। यह रत्न आपको कार्यक्षेत्र में बड़ी सफलता दिला सकता है। रत्न शुभता से नेतृत्व करने की अद्भुत योग्यता सामने आयेगी।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में सूर्य तृतीय भाव का स्वामी है। पराक्रमेश सूर्य का माणिक्य रत्न धारण कर आप अपने पुरुषार्थ से अपने अधिकारिक शक्तियों में बढ़ोतरी कर सकते हैं। माणिक्य रत्न धारण बाहुबल द्वारा धन व परिवार में वृद्धि, भाई-बहनों से सुख प्राप्त करा सकता है। माणिक्य की शुभता आपको धनी, साहसी, प्रभावशाली व्यक्तित्व भी प्रदान कर सकती है। इस रत्न को धारण कर आप यात्राओं में सुख का अनुभव करेंगे। सूर्य की सभी शुभता प्राप्त करने के लिए आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु तीसरे भाव में स्थित है। आप राहु रत्न गोमेद धारण करें। इस रत्न को धारण करने से आपके पराक्रम भाव को बढ़ाएंगे। शत्रु आपसे भयभीत रहेंगे। गोमेद रत्न सकारात्मक विचारधारा बनाये रखेगा। रत्न के प्रभाव से आप प्रभावशाली व्यक्तित्व के स्वामी होंगे। पराक्रम व बल की बढ़ोतरी होगी। प्रवास के कार्यों में सफलता मिलेगी। मनोकूल पद की प्राप्ति होगी एवं उत्तरोत्तर उन्नति होगी। आप धर्म-कर्म की गतिविधियों में रुचि लेंगे। गोमेद रत्न आपके लिए शुभदायक है।

राहु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य दशम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण कर आप आजीविका क्षेत्र में चातुर्य से उन्नति प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको

कर्मक्षेत्र में उच्च पद, सम्मान एवं अधिकार शक्ति देगा तथा रत्न पहन कर आप व्यवहार कुशल होंगे। रत्न शुभता से आप धनवान, बुद्धिमान और पितृ-सुखयुक्त होंगे। यह रत्न आपको आजीविका क्षेत्र में व्यर्थ विवादों में सम्मिलित होने से बचाएगा। इस रत्न को धारण करने से आपको अधीनस्थों का सुख-सहयोग प्राप्त होगा। तथा यह रत्न आपके कार्यभार में कमी करेगा। आपके कार्यों में नियमितता आएगी। न्याय और परिश्रम कुशलता में वृद्धि होगी। आपको उत्तम व्यक्तियों के संपर्क में रहने के अवसर प्राप्त होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम ४ रत्ती और अधिकतम ८-१० रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल प्रथम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण से आप दुस्साहसी हो सकते हैं। जिसके कारण दुर्घटनाओं और चोटों की स्थिति बन सकती हैं। अत्यधिक दबाव में कार्य करने में आप असमर्थ हो सकते हैं। मूंगा रत्न आपको सिर दर्द दे सकता है। रत्न प्रभाव से वाणी पर नियंत्रण कम और आपका अत्यधिक क्रोध का स्वभाव हो सकता है। इसके अलावा यह रत्न धारण करने पर आपको अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में विशेष प्रयास करने पड़ सकते हैं। स्वास्थ्य की कमी के चलते बुखार आपको अपने प्रभाव में ले सकता है। इसके अतिरिक्त लग्न भाव में मंगल चतुर्थ, सप्तम एवं अष्टम भाव को देख रहा है। अतः इस रत्न को यदि आप धारण करते हैं तो सुख, ग्रहस्थ जीवन एवं बाधाओं का सामना भी आपको करना पड़ सकता है।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में मंगल षष्ठ भाव एवं आय भाव के स्वामी है। छेदे भाव का स्वामित्व होने के कारण मंगल रत्न मूंगा धारण करना आपके लिए कुछ कष्टप्रद हो सकता है। मूंगा रत्न पहनना आपको नेत्रों से संबंधित रोग शीघ्र दे सकता है। आप कम मिलनसार हो सकते हैं। लड़ाई-झगड़ों से बचने का प्रयास करेंगे। आपत्ति आने पर आप अत्यधिक साहस भाव से काम लेंगे। जिसके कारण चोट आदि की स्थिति बन सकती है। यह रत्न आपको क्रोधी, सख्त बोलने वाले, रक्त विकारी एवं हठी बना सकता है। मूंगा रत्न आपको शत्रुओं द्वारा हानि दे सकता है। अप्रयाशित घटनाओं के कारण आर्थिक स्थिति में अस्थिरता बन सकती है। आय क्षेत्रों में चोरी आदि का भय हो सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु नवम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण कर आपको वाहनों का खतरा हो सकता है। वाहन से गिरने के कारण आपको चोट लग सकती है। धर्म से विपरीत आप जा सकते हैं। दूसरे धर्मी पर अधिक विश्वास कर सकते हैं। लहसुनिया रत्न आपकी राजनैतिक सफलता बाधित कर सकता है। आप पर लोगों का विश्वास कम हो सकता है। लहसुनिया रत्न आपके पिता के सुख में कमी ला सकता है। रत्न धारण के बाद आपके द्वारा किए गए धार्मिक कार्य मात्र दिखावा मात्र हो सकते हैं। सहोदर या भाईयों को रत्न प्रभाव से कष्ट की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। आपको संतान संबंधी चिंता रह सकती है। यह रत्न बाजुओं में दर्द की समस्या आपको दे सकता है।

केतु कुम्भ राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि आठवें भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपकी आयु में कमी होगी। आप असाध्य रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। बुरे मित्रों से आपके संबंध हो सकते हैं। यह रत्न आपमें साहस की कमी करेगा तथा आपमें उतावलापन देगा। धन संचय करना आपके लिए बेहद कठिन होगा। इस रत्न से आपके मान-सम्मान में कमी हो सकती है। यह रत्न आपकी वृद्धावस्था में कष्ट का कारण बन सकता है। रत्न प्रतिकूलता आपकी भाषा में अशिष्टता का भाव देगी। इस रत्न को पहनकर आप दुरुसाधनों से धन संचय का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको अवैध धन कमाने की ओर अग्रसर करेगा।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम धारण करने पर आप मानसिक रूप से कुछ हद तक असंतुष्ट हो सकते हैं। रत्न धारण से आपमें क्रोध की अधिकता और उत्साहहीनता आपमें देखने को मिलेगी। आप दूसरे के दोषों को शीघ्रता से सामने लायेंगे। नीलम रत्न से आपकी रुचि गूढ़ शास्त्रों में हो सकती है। यह रत्न आपको आलसी बना सकता है। इस रत्न का प्रभाव आपको ससुराल पक्ष के कारण हानि करा सकता है। यह रत्न आपके भाग्य में बाधक बन सकता है। नौकरी के क्षेत्र में बाधाएं और तनाव दे सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपका शिक्षा क्षेत्र बाधित हो सकता है।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में शनि नवमेश एवं अष्टमेश है। नीलम रत्न अष्टमेश शनि का रत्न होने के कारण इस रत्न में शुभता की आंशिक कमी हो सकती है। नीलम पहनने पर आपको स्वास्थ्य के पक्ष से पीड़ा का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपको वात, पित्त एवं चमरीग से परेशान कर सकता है। इसके अतिरिक्त नीलम धारण से आपको भाग्य का सहयोग कुछ कम प्राप्त होगा। ईष्ट फल प्राप्त होने में विलम्ब हो सकता है। यह रत्न आपको राज्य पक्ष से दंड एवं कष्ट दे सकता है। माता-पिता के स्नेह में कमी कर सकता है। नीलम रत्न आपकी परिश्रम क्षमता को प्रभावित कर सकता है। शनि रत्न नीलम आपकी विदेश यात्राओं में बाधाएं दे सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपका स्वजनों से लगाव कुछ कम हो सकता है। यह रत्न पैतृक धन की हानि करा सकता है। पुखराज रत्न प्रभाव से आपकी आर्थिक उन्नति में बाधाएं आ सकती है। धन, आय और लाभ रुक रुक कर आगे बढ़ेंगे। यह रत्न आपको सुमार्ग से हटा सकता है। आपकी अस्वस्थता बढ़ सकती है। कुल परंपराओं से आप हट सकते हैं। पुखराज रत्न आपको कंजूस और लालची भी बना सकता है। आपको अपनी योग्यता अनुसार कार्य न मिलने के योग भी बन रहे हैं। गैरधार्मिक विषयों पर आपके व्यय अधिक हो सकते हैं।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में गुरु सप्तमेश एवं दशमेश है। सप्तमेश गुरु का रत्न होने के कारण पुखराज रत्न धारण से आपको सभी शुभ फल नहीं मिल पाएंगे। पुखराज रत्न आपको जांघों से संबंधित रोग दे सकता है। यह रत्न धारण करने पर आपकी पदोन्नति विलम्बित हो सकते हैं। कार्यक्षेत्र में आपके उत्तरदायित्व बढ़ सकते हैं। व्यवसायिक क्षेत्र में अस्थिरता की स्थिति बन सकती है। विदेशी संपर्क से आपको यथायोग्य लाभ प्राप्त नहीं हो पाएगा। यह रत्न आपके वैवाहिक जीवन में वैमनस्य का भाव ला सकता है। जीवनसाथी, साझेदारी और व्यापार क्षेत्र की शुभता बाधित हो सकती है। पुखराज रत्न प्रभाव से आपको मूत्राशय रोग एवं गुप्त रोगों के संपर्क में आना पड़ सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

शुक्र

(15/02/2015 - 15/02/2035)

शुक्र की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, मोती, माणिक्य, लहसुनिया व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं और पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य

(15/02/2035 - 15/02/2041)

सूर्य की दशा में आपका पन्ना, मोती व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, नीलम व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(15/02/2041 - 15/02/2051)

चन्द्र की दशा में आपका पन्ना व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा, गोमेद व नीलम रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(15/02/2051 - 15/02/2058)

मंगल की दशा में आपका पन्ना व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, हीरा, मूंगा व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद व नीलम रत्न नेष्ट हैं और पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(15/02/2058 - 16/02/2076)

राहु की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, मोती, माणिक्य व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा, लहसुनिया व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - पन्ना

आपका जन्म मिथुन राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी बुध होता है। बुध सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह सूर्य के सबसे अधिक नजदीक है और सूर्य ग्रहों का राजा होता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः मिथुन राशि के लग्न वाले जातकों को मिथुन राशि के स्वामी ग्रह बुध को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। बुध ग्रह के लिये पन्ना रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी बुध राजकुमार व व्यापार का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज सम्मान की प्राप्ति तथा व्यापार में आशातीत लाभ व विद्यार्थियों को बुद्धिबल प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को बड़ी बहन, बुआ और मौसी का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। बुध ग्रह वाणी एवं बुद्धि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको वाणी दोष या आत्मविश्वास से संबंधित परेशानी हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा बुद्धि बल की प्राप्ति होती है जिससे विद्यार्थीगण अपनी परीक्षाओं में अच्छे अंकों से सफलता प्राप्त करते हैं।

पन्ना रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि कनिष्ठिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में बुध की अंगुली मानी जाती है। पन्ना रत्न बुध का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् बुधवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल बुध की होरा में श्रेष्ठ होता है। बुधवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय बुध की होरा का होता है। पन्ना को यदि बुधवार के साथ-साथ बुध के नक्षत्र अर्थात् आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

पन्ना को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर हरे रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, बुध के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

बुध का मंत्र - ॐ बुं बुधाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात् यदि बुध से संबंधित पदार्थ जैसे मूंग दाल, पीतल,

सवा मीटर हरे कपड़े का दान करें तो पन्ना रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन बुध का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और हिजड़ों को यथोचित समय-समय पर वस्त्र या पैसे आदि का दान करें तो यह पन्ना रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक बुधवार को गणेश जी की उपासना करें तथा गणेश जी को मोदक का भोग लगायें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

मिथुन लग्न वाले जातक यदि पन्ना रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली मिथुन लग्न की हैं। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं आपका मस्तिष्क सदैव विचारमान व गतिमान रहता है इसलिए हर समय कुछ न कुछ आपके मस्तिष्क में चलता रहता है। लग्न स्वामी बुध होने की वजह से कठिन से कठिन काम को भी आप अपनी बुद्धि कौशल से आसान बना लेते हैं। द्विस्वभाव लग्न होने से आपके स्वभाव में भी दोहरापन (वास्तव में लचीलापन) होता है। समय के अनुसार अपने व्यवहार को बदल लेना अथवा हर परिस्थिति में स्वयं को ढाल लेना, वातावरण को अपने अनुसार ढाल लेना या स्वयं वातावरण के अनुसार ढल जाना आपके स्वभाव की विशेषता होती है। आपका व्यवहारिक ज्ञान अच्छा होता है। हर चीज को सीखने एवं पाने की ललक आप में रहती है। आप खाली नहीं बैठ सकते हैं। हर

समय व्यस्त रहना कुछ नया करने की इच्छा आपमें रहती है। आपका हँसमुख स्वभाव आपको हर जगह लोकप्रिय बनाता है।

6, 8, व 12 भाव त्रिक भाव के नाम से जाने जाते हैं। त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता है। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

मिथुन लग्न में छठे भाव व एकादश भाव के स्वामी मंगल हैं। आप अपने साहस का उपयोग अनैतिक कार्यों के लिए कर सकते हैं, मिथ्या वचन बोलने से भी आप बचे, तथा युद्ध अथवा लड़ाई हेतु सदैव तत्पर हो सकते हैं। शत्रुओं पर विजय प्राप्ति सहज हो जाती है। अपने बड़े भाई-बहनों से वैर-भाव रखने वाले हो सकते हैं। विष, अग्नि, शास्त्र सेपीड़ित हो सकते हैं।

अष्टम व नवम भाव के स्वामी शनि हैं। अष्टम भाव के स्वामी शनि के प्रभाव से आपके पिता के स्वास्थ्य में कमी, भाग्यवृद्धि में बाधक, अधिनस्थों की ओर से सहयोग में कमी, लम्बी अवधि के रोग, ऋण आपके कार्यों में व्यर्थ का विलम्ब कर सकते हैं। इस योग की अशुभता से रोजगार प्राप्ति में व्यवधान, धन संग्रह में बाधा का सामना करना पड़ सकता है।

पंचम भाव और द्वादश भाव के स्वामी शुक्र हैं। शुक्र पंचमेश व द्वादशेश होकर आपके वैवाहिक सुखों में कमी का कारण बन सकता है। इसके अतिरिक्त शुक्र व्यय, हानि, दंड व अलगाव दे सकता है।

गुरु का अष्टम भाव में स्थित होने से पैतृक संपत्ति का नाश हो सकता है। बुद्धि विवेक से धनार्जन करने में सफल, माता के सहयोग से भाग्योन्नति, उन्नति में विलम्ब, कारावास संभव। आपका भाग्योदय विलम्ब से होगा। संघर्षों के उपरान्त आपको कार्यों में सफलता, धन और यश की प्राप्ति होगी। व्यय शुभ कार्यों पर होंगे। धन, कुटुंब और विद्या से सुख की प्राप्ति होगी। माता, घर, जमीन -जायदाद और वाहन सुख दे रहे हैं।

शनि के अष्टम भाव में होने से आप दीर्घ अवधि के लिए रोगी हो सकते हैं, यह योग मानसिक सुखों में भी कमी कर रहा है। धन में कमी, व्यवसाय में हानि, पैतृक संपत्ति प्राप्ति में बाधक, संतान कष्ट दे सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 5, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए।
क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए
आवश्यक हैं।



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/03/1961-17/09/1961 08/10/1961-27/01/1964	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	28/04/1971-10/06/1973	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	10/06/1973-23/07/1975	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	23/07/1975-07/09/1977	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/11/1979-15/03/1980 27/07/1980-06/10/1982	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/03/1990-20/06/1990 15/12/1990-05/03/1993 15/10/1993-10/11/1993	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	कम खर्च
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	सम	स्वास्थ्य
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	धन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	सुख

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल लग्न में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है इस मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा पित या गर्मी से किंचित परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप स्वभाव से तेजस्वी रहेंगे तथा स्वपराक्रम के द्वारा अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कोई वार्ता भी असफल हो सकती है लेकिन विवाह अवश्य होगा तथा विवाहोपरांत आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा तथा सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से जीवन में आपको आवश्यक सुख संसाधनों की प्राप्ति में किंचित परिश्रम करना पड़ेगा साथ ही जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे। सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि के प्रभाव से जीवन साथी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं परस्पर मधुरता के संबंध बने रहेंगे। मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर होने के कारण सांसारिक कार्यों में यदा कदा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। उर्पयुक्त योग के प्रभाव से यदा कदा पित जनित कष्ट की भी संभावना रहेगी लेकिन इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

अतः मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे मांगलिक दोष परस्पर भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि राहु या अन्य पाप ग्रह की स्थिति होनी चाहिए। यदि इस प्रकार मांगलिक दोष भंग होने के पश्चात आप विवाह करेंगे तो आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा

जीवन में समस्त सुखोपभोग की सामग्री को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आप सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुंडली में शुक्र के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें । 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें ।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, अच्छा वक्ता एवं अच्छा अन्तर्ज्ञान वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, क्रूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

मिथुन राशि में मंगल हो तो जातक शिल्पकार, परदेशवासी, कार्यदक्ष, सुखी, जनहितैषी, विद्वान्, बलवान् शरीर, कवि, संगीतकार, नीतिज्ञ, कुशाबुद्धिवाला एवं चतुर होता है।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आधिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

बुध

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

मेष राशि में शुक्र हो तो जातक स्वप्न जगत में विचारने वाला, आवेशपूर्ण स्वभाव, अस्थिरमन, दुःखी, बुद्धिमान्, आरामतलब, दुराचारी, परस्त्रीरत, झगड़ालू विश्वास हीन एवं अधिक खर्च करने वाला होता है।

शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

तृतीय भाव में राहु हो तो जातक योगाभ्यासी, विद्वान्, व्यवसायी, पराक्रमशून्य, दृढ़विवेकी, अरिष्टनाशक, प्रवासी, दीर्घायु एवं बलवान् होता है।

सिंह राशि में राहु हो तो जातक चतुर, विचारक, सज्जन, नीति दक्ष एवं सत्पुरुष होता है।

केतु

नवम भाव में केतु हो तो जातक सुखाभिलाषी, व्यर्थपरिश्रमी अपयशी, दुःखी एवं 48 वर्ष के बाद भाग्योदय होता है।

कुम्भ राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, कर्णरोगी, भ्रमणशील, व्ययशील एवं साधारण धनी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। मिथुन लग्न में उत्पन्न जातक विनम्र उदार एवं हास्य प्रवृत्ति के व्यक्ति होते हैं तथा बुद्धिमता का भाव उनके चेहरे से परिलक्षित होता है। इनमें स्वाभिमान का भाव विद्यमान रहता है तथा भौतिक सुख संसाधनों एवं धनैश्वर्य से सम्पन्न रहते हैं। वे कार्यों को अत्यंत ही सोच समझकर सम्पन्न करते हैं तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से उनका सम्पर्क बना रहता है। संगीत एवं कला के प्रति इनकी रुचि रहती है तथा नवीन सिद्धांतों या मूल्यों का प्रतिपादन करने में समर्थ रहते हैं। इसके अतिरिक्त गणित लेखन या संपादन के क्षेत्र में इनको सफलता प्राप्त होती है।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। अपने समस्त सांसारिक महत्व के कार्यों को आप बुद्धिमतापूर्वक सम्पन्न करेंगे। साथ ही जीवन में स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आपको भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी तथा धनैश्वर्य से सुसम्पन्न होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

मित्रों के प्रति आपके मन में पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा सरकारी कार्यों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा वाणी में भी मधुरता रहेगी। साथ ही शांत विनम्र एवं हास्य प्रवृत्ति के कारण अन्य जनों को प्रभावित तथा आकर्षित करने में समर्थ रहेंगे। कला एवं संगीत के प्रति आप रुचिशील रहेंगे तथा प्रयत्न से इस क्षेत्र में मान प्रतिष्ठा भी प्राप्त हो सकती है। लेखन गणित, सम्पादन या व्यापार संबंधी कार्यों में आप उन्नति प्राप्त करके समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में स्वयं को स्थापित करने में समर्थ रहेंगे।

लग्न में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय होगा तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा फलतः अन्य लोग आपसे प्रभावित तथा आकर्षित रहेंगे। जीवन में समस्त सांसारिक सुखों का उपभोग करने में आप सफल होंगे तथा धनैश्वर्य एवं वैभव से भी सुसम्पन्न रहेंगे। आप एक विद्वान पुरुष होंगे फलतः अपनी विद्वता से समाज में मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे।

धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव होगा तथा निष्ठापूर्वक आप धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे। साथ ही अवसरानुकूल आप सामाजिक जनों के मध्य उदारता तथा दानशीलता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे फलतः सामाजिक प्रभाव तथा मान प्रतिष्ठा में सतत वृद्धि होती रहेगी मर्म के आप ज्ञाता होंगे तथा गूढ़ से गूढ़ विषय को हृदयंगम करने में समर्थ होंगे।

व्यापार के प्रति आपकी विशेष रुचि होगी तथा इसके द्वारा आप धनवान एवं विख्यात होंगे। संगीत एवं कला में भी आप समयानुसार अपनी रुचि का प्रदर्शन करते रहेंगे। सांसारिक ऐश्वर्य से आप युक्त होंगे। तथा सामान्यतया आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता से युक्त ही रहेगा।

इस प्रकार आप शांत उदार हास्य प्रवृत्ति युक्त एवं विद्वान् पुरुष होंगे तथा जीवन में समस्त सुखों को अर्जित करके प्रसन्नता पूर्वक उनका उपभोग करेंगे।



धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय भाव में कर्क राशि स्थित है जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप भावुक प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा यदाकदा अधिक बोलने वाली प्रवृत्ति भी रहेगी। समाज में आप एक सम्माननीय व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथायोग्य सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी वाणी भी मधुर होगी तथा अपने विचारों को आप स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने में समर्थ रहेंगे। फलतः सभी लोग आपकी वाणी से प्रभावित होंगे।

परिवार में सुख शान्ति तथा समृद्धि उत्तम रहेगी तथा परिवार की शान्ति तथा खुशहाली के लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगे। साथ ही संतति से भी आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपको सुन्दर तथा स्वादिष्ट भोजन करना रुचिकर लगेगा। विशेष रूप से मिष्ठान के आप प्रिय रहेंगे तथा रुचिपूर्वक इनका भक्षण करेंगे लेकिन इससे यदा कदा आपको स्वास्थ्य संबंधी परेशानी भी हो सकती है अतः इनकी अधिकता की उपेक्षा करनी चाहिए। साथ ही धार्मिक उत्सवों को भी आप समय समय पर परिवार में आयोजन करते रहेंगे। आप अपने विचारों की पुष्टि में हमेशा ठोस तर्कों को प्रस्तुत करेंगे जिसे सभी लोग स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त लकड़ी के व्यापार से आप लाभ अर्जित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त पुत्रों का आपके प्रति विशेष स्नेह रहेगा तथा आपकी सेवा में वे सर्वदा तत्पर रहेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त भौतिक सुखसंसाधनों एवं उपकरणों से युक्त रहेंगे तथा आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। बुध के प्रभाव से आप में बुद्धिमता एवं व्यावहारिकता के भाव की प्रधानता होगी फलतः अपने इन्हीं गुणों से जीवन में ऐश्वर्य एवं वैभव की प्राप्ति करेंगे तथा समाज में आपका सम्माननीय स्तर रहेगा।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल संपत्ति को अवश्य प्राप्त करेंगे। संबंधीवर्ग से भी आपको न्यूनाधिक मात्रा में चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आप स्वयं एक बुद्धिमान एवं योग्य व्यक्ति होंगे तथा अपने इन ही गुणों से भी वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति अर्जित करके अपने ऐश्वर्य एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगे।

जीवन में आपको उत्तम गृह की प्राप्ति होगी तथा आपका घर समस्त आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित होगा। घर की सफाई के प्रति आप पूर्ण रूपेण तत्पर होंगे तथा अन्य पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा उनसे संबंधों में पर्याप्त मधुरता होगी। इसके अतिरिक्त युवावस्था में ही आपको उत्तम वाहन की प्राप्ति होगी तथा जीवन में विभिन्न प्रकार से आप वाहन सुख अर्जित करने में समर्थ होंगे।

आपकी माता बुद्धिमान शिक्षित एवं आदर्शवादी महिला होंगी तथा अपनी बुद्धिमता एवं व्यावहारिकता से सभी पारिवारिक जनों को अपनी ओर से सन्तुष्ट रखेंगी। सभी लोग उनका सम्मान एवं आज्ञा का पालन करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट स्नेह एवं वात्सल्य की भावना होगी तथा अवसरानुकूल आपको आर्थिक एवं नैतिक सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आपका भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा एवं सुख-दुःख में उन्हें पूर्ण रूप से सहयोग प्रदान करेंगे जिससे आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी।

आप प्रारंभ से ही बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अध्ययन के प्रति आपकी पूर्ण रुचि होगी एवं प्रारंभिक कक्षाओं से ही अच्छे अंक अर्जित करेंगे। अतः स्नातक परीक्षा आप अच्छे अंकों से उत्तीर्ण करेंगे तथा अपने उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेंगे। इससे आपके आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा अन्य संबंधियों एवं मित्रों से उचित सम्मान एवं प्रोत्साहन मिलेगा जिससे कार्य क्षेत्र में आप आशातीत उन्नति प्राप्त करेंगे।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में तुला राशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमत्ता से सम्पन्न करेंगे। इससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे साथ ही कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान आप अपनी बुद्धि से करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्मशास्त्र में भी आपकी रुचि होगी तथा इन ग्रंथों का अध्ययन करके वांछित मात्रा में ज्ञान अर्जित करेंगे। बुध के प्रभाव से साहित्य या कविता लेखन, गणित एवं ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान भी आपको होगा तथा इस क्षेत्र में कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि भी अर्जित कर सकते हैं जिससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा एक विद्वान के रूप में आपकी प्रतिष्ठा होगी।

शुक्र की राशि की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी परंतु आपका प्रेम आदर्शवाद एवं मर्यादा की सीमा में होगा तथा इसको आप केवल मनोरंजन या समय व्यतीत करने का समाधान नहीं मानेंगे। अतः आपका प्रेम प्रसंग विवाह के रूप में भी परिवर्तित हो सकता है जिससे आपका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा संतति में कन्याओं की संख्या पुत्र से अधिक होगी लेकिन सभी बच्चे बुद्धिमान एवं गुणवान होंगे तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से जीवन में उन्नति एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर होंगे। माता पिता के वे आज्ञाकारी होंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को माता पिता की सलाह से ही सम्पन्न करेंगे जिससे परस्पर सद्भाव बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति उनमें विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्या का समाधान माता से ही करवाना अधिक पसंद करेंगे लेकिन मान सम्मान एवं श्रद्धा का भाव माता पिता के प्रति समान रूप से रहेगा।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके बच्चे आशातीत उन्नति करेंगे तथा अच्छे अंको से अपनी परिक्षाओं को उत्तीर्ण करके उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करेंगे। वे उच्च पदों पर भी नियुक्त हो सकते हैं। इसके वे स्वभाव से विनम्र एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अन्य सामाजिक जन भी उनसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे जिससे आपके सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। अपने बच्चों पर आपको गौरव होगा तथा वे भी वृद्धावस्था में आपकी श्रद्धा पूर्वक सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगे।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है सामान्यतया धनु राशि की सप्तम भाव में स्थिति के कारण जातक का सहयोगी पुष्ट शरीर वाला बुद्धिमान एवं कार्य कुशल होता है तथा बुध के प्रभाव से उसमें विद्वता कलाप्रियता एवं सहिष्णुता का भाव भी रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी बुद्धिमान विदुषी एवं सुशील स्वभाव की महिला होंगी तथा कला के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा। साथ ही सांसारिक कार्यों में वह निपुण होंगी तथा कुशलता पूर्वक अपने कार्य कलाओं को सम्पन्न धर्म के प्रति भी उनके मन में श्रद्धा होगी तथा सहिष्णुता के भाव से भी युक्त होंगी इसके अतिरिक्त वह एक कर्तव्य परायण महिला होंगी एवं समाज तथा परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी गौरवर्ण की सुंदर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य होगा। शारीरिक रूप से पुष्ट होंगी एवं अंग प्रत्यंग भी सुडौल रहेंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी। साथ ही उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा एवं कला के प्रति समर्पण की भावना रहेगी सौन्दर्य में अभिवृद्धि के लिए वह अवसरनुकूल सौन्दर्य प्रसाधनों का भी उपयोग करेंगी। उनके शरीर में अग्नि तत्व राशि के प्रभाव से पतलापन रहेगा जिससे सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व आकर्षक बना रहेगा।

आपका विवाह विज्ञापन के द्वारा सम्पन्न होगा या आप स्वेच्छा से प्रेम विवाह सम्पन्न करेंगे। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं समर्पण का भाव होगा। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों को एक दूसरे की सलाह एवं सहमति से पूरा करेंगे। आप दोनों सहनशील स्वभाव के होंगे अतः एक ही प्रवृत्ति होने के कारण आपसी संबंधों में मधुरता होगी तथा दाम्पत्य जीवन का पूर्ण आनंद उठाएंगे।

आपका ससुराल किसी धनाढ्य एवं सम्मानित परिवार से होगा फलतः विवाह के समय आपको ससुराल से प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। सास ससुर से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा आपको वांछित सम्मान प्रदान करेंगे। वे भी आपको पुत्रवत स्नेह देंगे तथा महत्वपूर्ण मामलों में सलाह या सहमति का भी आदान प्रदान होगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की सेवा एवं सम्मान की भावना होगी तथा श्रद्धा पूर्वक उनकी सेवा में तत्पर रहेंगी एवं अपनी और से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी साथ ही देवर एवं ननदों को भी अपने सद्व्यवहार एवं मृदुवाणी से प्रसन्न रखेंगी तथा वे भी आपको वांछित सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे। इससे पारिवारिक शांति बनी रहेगी।

व्यापार या किसी महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा इससे आपको वांछित लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। साथ ही सूर्य भी दशम भाव में ही स्थित है। मीन राशि जलतत्व एवं सूर्य अग्नितत्व युक्त ग्रह है अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया द्वारा सम्पन्न होगा तथा अवसरानुकूल आप इसमें परिवर्तन भी करते रहेंगे। ऐसे सामायिक परिवर्तनों से आपको लाभ भी होता रहेगा तथा कार्य क्षेत्र की उन्नति से आप पूर्ण सन्तुष्ट रहेंगे।

सूर्य की दशम भाव में मीन राशि में स्थिति के प्रभाव से आपके लिए सरकारी सेवा ओषधि विज्ञान वैद्य, डाक्टर तथा प्रतियोगी परीक्षाओं द्वारा कोई सम्मानित पद तथा प्रशासकीय सेवा अनुकूल रहेगी। साथ ही विज्ञान के क्षेत्र में भी आप किसी उच्चपद को प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त बैंक प्रबंधन या प्रशासन में भी आप अपनी आजीविका प्रारंभ कर सकते हैं। अतः आपको चाहिए कि ऊपर निर्दिष्ट विभागों या क्षेत्रों में ही अपने कार्य क्षेत्र का चयन करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको अपने कार्य क्षेत्र में पूर्व सफलता एवं उन्नति प्राप्त होगी तथा अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा एवं सतत उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे।

व्यापारिक क्षेत्र में आपके लिए दवाओं का व्यापार, ऊनी वस्त्र तथा रत्न संबंधी कार्य शेयर कारोबार, वित्तीय विनियोग, सरकारी क्षेत्र से संबंध ठेके या अन्य कार्य, विद्युत उपकरण तथा अनाज के व्यापार से आपको यथोचित लाभ होगा एवं इन क्षेत्रों में व्यापार करने से आपको वांछित उन्नति एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। अतः यदि आप व्यापार प्रारंभ करें तो इन्हीं क्षेत्रों में आपको शुभारम्भ करना चाहिए जिससे आप पूर्ण लाभ अर्जित कर सकें।

जीवन में आप वांछित मान सम्मान एवं यश अर्जित करने में सफल होंगे तथा आपके प्रभाव को सभी लोग मन से स्वीकार करेंगे। आप किसी प्रमुख संस्था में उच्चपदाधिकारी भी हो सकते हैं जिससे आपके प्रभाव एवं मान सम्मान में वृद्धि होगी साथ ही राजनैतिक नेताओं एवं उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको पूर्ण सहयोग की प्राप्ति होगी। अतः जीवन में मान प्रतिष्ठा तथा यश से आप सुशोभित होंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

दशम भाव में दिग्बली एवं मित्रराशि में स्थित सूर्य के प्रभाव से आपके पिता एवं बुद्धिमान, शिक्षित एवं तेजस्वी प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे। उनका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा सामाजिक जनों के मध्य वे आदरणीय तथा प्रभावशाली माने जाएंगे। साथ ही अपने उत्कृष्ट कार्य कलापों से वे अन्य जनों के प्रिय बने रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा कार्यक्षेत्र में आपकी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान होगा तथा उन्हीं के प्रभाव से आपको विशिष्ट उपलब्धियां प्राप्त होंगी। साथ ही यश एवं प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनके आज्ञापालन में तत्पर रहेंगे परन्तु सूर्य की अपनी राशि से अष्टम स्थिति के प्रभाव से सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि नवम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु दशम भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि दशम भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरुद्वादश भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि लग्न स्थान में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि द्वितीय भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि लग्न स्थान में आ जाएगी।

व्यवसाय

व्यापारिक दृष्टि से देखें तो वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरुग्रह के गोचरीय प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष लाभ प्राप्त नहीं होगा। आपको अपने व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अतः इस समय के अन्तराल में कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ न करें, पहले से चले आ रहे व्यापार को ही सुव्यवस्थित ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है।

मई के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपको अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। लग्न स्थान के गुरुनयी विचारधारा नयी योजनाओं को जन्म देंगे जिसका लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में और उन्नति करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान के गुरुधनागम में रुकावट उत्पन्न करेंगे, जिससे आर्थिक उन्नति में कमी हो सकती है। इस समय के अंतराल में निवेश न करें और न ही ऋण दें, नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है। मातुल पक्ष से लाभ प्राप्त होगा।

गुरुग्रह के गोचर के बाद समय शुभ हो रहा है। उस समय आपका रुका हुआ धन वापस मिल सकता है। सप्तम स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा या आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में इनका पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में चतुर्थ स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परन्तु 29 मार्च के बाद माता-पिता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

गुरुग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी।

सप्तम स्थान पर गुरुएवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान का गुरुसंतान सम्बन्धित कुछ चिन्ताएं दे सकता है परन्तु मई के बाद लग्नस्थ गुरु के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चे निरन्तर आगे बढ़ेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करेंगे एवं उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश होगा।

नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भधान हेतु समय शुभ है। दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा है। यदि विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का गुरुआपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना सकते हैं। मधुमेह रोगियों को अधिक परहेज की आवश्यकता है। गुरुग्रह के पृथ्वी तत्व राशि में होने के कारण संक्रामक या पेट संबंधित परेशानियां हो सकती हैं।

मई के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान एवं दिनचर्या को अनुशासित रखेंगे। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में षष्ठ स्थान पर गुरुएवं शनि की संयुक्त दृष्टि के कारण प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अच्छी सफलता मिलेगी। वर्ष के प्रारम्भ में बेराजगारों को रोजगार की प्राप्ति हो सकती है।

मई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। आप पढ़ाई लिखाई में सब से आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो सकता है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए समय काफी अनुकूल है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वादशस्थ गुरुविदेश यात्रा के शुभ योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में विदेश यात्रा होगी।

मई के बाद नवम स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि लम्बी यात्रा के योग बना रही है। तृतीय स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि छोटी-मोटी यात्राएं कराती रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप दान-पुण्य, गरीबों को भोजन, भिक्षुओं को भिक्षा, धार्मिक अनुष्ठान इत्यादि अधिक करेंगे। मई के बाद आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा एवं पूजा पाठ में रुचि लेंगे। गुरुजनों व वरिष्ठ लोगों का सम्मान करें व उनके उपदेशों का पालन करें।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं।



वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें अष्टम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु लग्न स्थान में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमेंद्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें तृतीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत उत्तमरहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनिग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे जिससे आपकी आय में वृद्धि होगी। लग्न स्थान का गुरु नवीन विचार धारा नयी योजनाओं को जन्म देगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने नयेव्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं औरकम समय में उत्तम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। साझेदारी या शेयर बजार में आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

02 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। आपको वरिष्ठ लोगों या बड़े अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगाजिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। धन संचय करने में आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी। 02 जून के बाद आपको रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपको रुके हुए पैसे मिल सकते हैं। इस वर्ष आपके परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले होथों से खर्च करेंगे। निवेश में उत्तम फल मिलने की सम्भावना है।

31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर तृतीय स्थान में होगा। उस समय सामाजिक व धार्मिक कार्यों पर आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनिग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। यदि आप विवाह के योग्य है तो विवाह हो सकता है।

02 जून के बाद परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोतरी हो सकती है। आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत अच्छा रहेगा। पिताजी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। 31 अक्टूबर के बाद आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि से आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उपयुक्त समय है। यदि आपकी सन्तान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अनुकूल है। उसको अपने कार्य क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त होगी। इस वर्ष आप के बच्चे अच्छे काम करेंगे। आप अपने बच्चों पर गर्व करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में हमेशा सकारात्मक विचार आएंगे जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे एवं अपनी दिनचर्या भी सही रखेंगे। यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

25 नवम्बर के बाद राहु ग्रह का गोचर अष्टम स्थान में हो रहा है। उस समय अचानक आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः वर्षान्त में अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना अधिक जरूरी है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल है।

पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। 02 जून के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्त होगी। जिन जातकों की नौकरी अभी तक नहीं लगी है, 02 जून के बाद उन लोगों को नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं होंगी।

द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से यात्राओं के प्रबल योग बन रहे हैं। 02 जून के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा करेंगे और 31 अक्टूबर के बाद आपकी

छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। आप गुरु मन्त्र लेकर साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। 02 जून के बाद मन्त्र सिद्ध व गुप्त विद्याओं की ओर आपका रुझान बढ़ेगा।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके समने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- अपने मन को केन्द्रित करने के लिए ध्यान करें एवं नित्य प्रणायाम करें।



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि दशम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं दशम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष अष्टम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत बढ़िया रहेगा। दशम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने कार्य क्षेत्र में अच्छा सफलता प्राप्त करेंगे। बड़े अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से कुछ गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट उत्पन्न करने की कोशिश कर सकते हैं। आप अपने विवेक से उन पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे।

26 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके आय के स्रोत में वृद्धि होगी। व्यापारिक व्यक्तियों को इस समय के अंतराल में अच्छा लाभ होगा। आपको मित्रों का भी भरपूर सहयोग मिलेगा। यदि आप अपने भाई के साथ कार्य कर रहे हैं तो बहुत अच्छा उन्नति करेंगे। 26 नवम्बर के बाद भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यापारियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आर्थिक संपन्नता बनी रहेगी। रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। व्यापारिक अनुकूलता से आपकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा। इस समय के अंतराल में आप इच्छित निवेश करेंगे। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके कुछ अनावश्यक खर्च भी हो सकते हैं।

26 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम के स्रोत में वृद्धि होगी। कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाईयों का अहम सहयोग होगा। मांगलिक कार्यों में भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं। 26 नवम्बर के बाद आपको भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का पूर्वार्द्ध पारिवारिक रूपसे अच्छा रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके

परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में एक-दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनी रहेगी। परिवार में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। भाइयों का सहयोग मिलता रहेगा। अष्टम स्थान का राहु आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध खराब कर सकता है।

26 जून के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज में आपका अपना एक अलग व्यक्तित्व होगा। पत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। गर्भाधान के लिए समय अच्छा चल रहा है।

26 जून से आपके दूसरे बच्चे के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आप का दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा। इस समयान्तराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। आपकी शारीरिक उर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहें। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करें जिससे आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से आप कभी कभी छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। परन्तु गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप जल्दी अच्छे हो जाएंगे। 26 नवम्बर से आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने कारण आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। विद्यार्थियों के लिए यह समय शुभ रहेगा।

26 जून के बाद तकनीकी शिक्षा या व्यापार के लिए समय अच्छा हो रहा है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है। परन्तु 26 जून के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा के लिए भी समय काफी अच्छा है।

26 नवम्बर के बाद आप परिवार के साथ अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। पर्यटन स्थल व दार्शनिक स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। यात्रा करते समय सावधान रहें क्योंकि अष्टम स्थान का राहु अचानक दुर्घटना दे सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्य के लिए बढ़िया रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 26 जून के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। धार्मिक कार्य, गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। 26 नवम्बर के बाद अपने परिवार में सुख, शान्ति या समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन व कोई धार्मिक कार्य भी संपन्न करेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने नित्य दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्तों को रोटी में गुड़ डालकर खिलाएं या राहु ग्रह का ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सं राहवे नमः मन्त्र का जाप करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीस का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यवसाय के लिए उत्तम रहेगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके कार्यों में कुछ विरोधी या गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं।

वर्षारम्भ में उन्नति के लिए नये नये तरीके अपनाएं। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे। प्रोपर्टी डीलर या कमीशन पर कार्य करने वाले व्यक्तियों की उन्नति होगी। सप्तम स्थान का राहु साझेदारी में कार्य करने वालों के लिए अच्छा नहीं है।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से भूमि, भवन व वाहन इत्यादि का सुख मिलेगा। भौतिक सुख-सुविधाओं पर आप अधिक खर्च करेंगे। फरवरी के बाद आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। निवेश के लिए समय काफी अच्छा चल रहा है परन्तु अष्टम स्थान का राहु कभी कभी अनावश्यक खर्च करा सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपकी आर्थिक उन्नति में आपके भाईयों एवं परिवार के लोगों का पूर्ण सहयोग होगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। आपका पत्नी के स्वास्थ्य पर भी पैसा खर्च हो सकता है। इस अवधि में वसीयत इत्यादि मिलने की भी संभावनाएं बन रही हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। चतुर्थ स्थान का गुरु पारिवारिक सुख प्रदान करने वाला है। पूरे परिवार में सुख शांति का वातावरण बना रहेगा। मांगलिक कार्य संपन्न होने के योग बन रहे हैं। परिवार में कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो सफलता प्राप्त हो सकती है।

28 फरवरी के बाद गुरु के तृतीय भाव में गोचर करने से आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार के कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाओं को चोट पहुंच सकती है। अतः अच्छा यही है कि विपरीत परिस्थितियों के लिए अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति

विकसित करें। 24 जुलाई के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। सप्तमस्थ राहु आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

संतान

यह वर्ष संतान की तरक्की के योग लेकर आ रहा है। शिक्षा के लिए समय बहुत अनुकूल हो रहा है। परिवार की उन्नति के लिए आपकी संतान नवीन योजनाएं बनाएं।

संतान के साथ प्रेम व समन्वय में मधुरता आएगी। घर का वातावरण उत्तम होने के साथ-साथ सामाजिक सम्मान बढ़ेगा। 24 जुलाई के बाद का समय आपके लिए शुभ है।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में स्वास्थ्य बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। स्वास्थ्य संबंधी किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

तनाव कम करने के लिए इस अवधि में आप अपने मन को एकाग्र कर योग क्रियाएं कर सकते हैं। इससे उत्साह का संचार होगा और आप अपने को स्वस्थ बनाए रखने में कामयाब रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर के लिए उत्तम रहेगा। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार करेंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अपने अंदर में की भावना ना आने दें। 23 फरवरी के बाद समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए विशेष शुभ है। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपके माता-पिता को धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए स्थानान्तरण के प्रबल योग बने हुए हैं। यह परिवर्तन आपके हित में होगा। 28 फरवरी के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी।

24 जुलाई के बाद आप अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे या अपने परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष यदि किसी तीर्थयात्रा या कोई धार्मिक कार्य करने जा रहे हैं तो

उसको योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा धार्मिक कार्य में असफलता या पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। 24 जुलाई के बाद पूरे परिवार के साथ कोई विशेष धार्मिक आयोजन जैसे- भगवती जागरण इत्यादि कर सकते हैं।

- भगवान गणेश व माँ दुर्गा की आराधना करें।
- गौ सेवा करें व अपने भोजन का पहला भाग गाय को खिलाएं।
- राहु मन्त्र का जाप करें या राहु की वस्तुओं का दान करें।



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशीर्ष होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में ही आप कोई नया व्यापार शुरू करेंगे जिसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा। उच्चअधिकारियों या वरिष्ठ लोगों की सहयोग मिलती रहेगी। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। 29 मार्च से आपके कार्य व्यवसाय में कुछ व्यवधान आ सकता है। शत्रु व विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती है।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर व्यावसायिक जीवन में समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। व्यापारिक व्यक्ति अपने कर्मचारियों व नौकरों पर विशेष ध्यान देना चाहिए नहीं तो सप्तमस्थ राहु के कारण अचानक वे आपका साथ छोड़ सकते हैं। साझेदारी में काम करने वाले व्यक्ति अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम होगा। आय भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह का संयुक्त गोचरीय प्रभाव धनागम के स्रोतों में वृद्धि करेगा। नये व्यापार से भी शीघ्र लाभ होने के योग हैं। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। 29 मार्च से पारिवारिक सदस्यों के स्वास्थ्य पर धन का व्यय होगा जिससे आर्थिक उन्नति रुक सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। मांगलिक कार्य व पुत्रादि के विवाह के अवसर पर भी धन का व्यय हो सकता है। सट्टा, लॉटरी, या शेयर इत्यादि से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थस्थ मंगल के प्रभाव से आपका पारिवारिक माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार से जुड़े हर मामलों में बहुत सावधानी

बरतने की आवश्यकता है। आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध खराब हो सकता है। 29 मार्च के बाद आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थितियां उत्पन्न होंगी। अतः अच्छा यही होगा कि विपरीत परिस्थितियों से लड़ने के लिए आप अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें।

25 अगस्त से आपका घरेलूम वातावरण अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। परिवार में सदस्यों की बढ़ोत्तरी होगी। 05 अक्टूबर के बाद आपके प्रेम संबंधों में मधुरता आएगी। आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। गर्भ धारण का अच्छा समय है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वह अपने बुद्धि एवं विवेक के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे परन्तु 29 मार्च से 25 अगस्त तक समय प्रभावित रहेगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के योग बन रहे हैं। उनके पराक्रम में वृद्धि होगी। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आपका यश बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन करेंगे।

29 मार्च के बाद स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। गुरु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। 25 अगस्त के बाद शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने का पूर्ण प्रयास करेंगे फिर चोट चपेट या दुर्घटना की स्थिति बन रही है। अतः कोई भी कार्य करते समय एकाग्रता बहुत जरूरी है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठतम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में कुछ उपलब्धी प्राप्त करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी समय उत्तम है। करियर में भी अच्छी सफलता मिलेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थी सफल होंगे परन्तु 29 मार्च के बाद करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यवसायिक रूप से भी समय अच्छा नहीं रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलेगी। रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह परिवर्तन आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। 08 अगस्त के बाद विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

यात्रा के दौरान छोटी-मोटी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। समय-समय पर आप गरीबों की सहायता करेंगे। वर्षान्त में मन्त्र साधना भी कर सकते हैं।

- शनिवार के दिन काली वस्तु या काला कम्बल मजदूरों या गरीबों में दान करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें।
- अपने माता-पिता की सेवा करें एवं अपने से बड़े लोगों का सम्मान करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(15/02/2015 - 15/02/2035)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 15/02/2015 को आरम्भ और 15/02/2035 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र सामान्य रूप से एक शुभ ग्रह कहा जाता है जो संगीत, ड्रामा, भावनात्मक आनन्द, स्वाद, फैशन तथा सुखमय जीवन का द्योतक है। यह दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। यह कन्या राशि में निम्न का तथा मीन राशि में उच्च का होता है। आपकी कुण्डली में यह एकादश भाव में स्थित है। यह आपकी जन्म कुण्डली के पंचम भाव को देख रहा है तथा उस पर भाव के कारकत्व का प्रभाव पड़ रहा है। यह विवाह का कारक भी है। भाव जिसमें यह स्थित है मित्र, समुदाय, लक्ष्य, इच्छा और उसकी पूर्ति, धन की प्राप्ति, समृद्धि, बड़े भाई, भाग्योदय तथा टखनों का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र एकादश अर्थात् आय भाव में स्थित है जहाँ से यह पंचम भाव को देख रहा है। इसके फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा तथा इस दशा काल में आपको कोई बड़ी या छोटी समस्या नहीं होगी।

अर्थ संपत्ति :

शुक्र एकादश भाव अर्थात् आय भाव के अतिरिक्त चतुर्थ अर्थात् अपने ही भाव में स्थित होकर भाव के कारकत्व को प्रबलित कर रहा है। इस दशा काल में आपकी आय में वृद्धि होगी। आप वाहन खरीद सकते हैं और चल-अचल संपत्ति अर्जित करेंगे।

व्यवसाय :

आप अपना व्यवसाय स्वयं आरंभ करेंगे। आप मवेशियों की खरीद-विक्री और जमीन-जायदाद का कारोबार करेंगे जो आपके लिए लाभदायक होगा। आपके मित्रों के अतिरिक्त आपके बड़े भाई सहयोगी स्वभाव के होंगे जो आपकी सहायता करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन आनन्दमय होगा। आप स्त्रियों के प्रति आकर्षित होंगे। आप पुरुषों से अधिक स्त्रियों से मित्रता करेंगे और स्त्रियों का साथ पाने को उत्सुक रहेंगे। आपके बच्चे आपके सहयोगी होंगे जो अपनी मेहनत के बल पर समाज में आपका नाम रौशन करेंगे। यह दशा अति आनन्ददायक होगी।

**अंतर्दशा :- शुक्र - राहु
(17/04/2022 - 17/04/2025)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 15/02/2015 को प्रारंभ होकर 15/02/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 3 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 17/04/2022 को प्रारंभ होकर 17/04/2025 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है।

राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है। इसका शुभ/अशुभ प्रभाव इसकी स्थिति, भाव और राशि के अनुसार होता है।

तृतीय भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के 9वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके प्रत्येक विषय पर स्वतंत्र विचार होंगे, इससे आपके आलोचकों की संख्या बढ़ेगी। मूल निवास से दूर जा सकते हैं। यात्राएं खूब होंगी। आपके भाई-बहनों को कुछ कष्ट हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - गुरु
(17/04/2025 - 17/12/2027)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 15/02/2015 को आरंभ हुई थी और 15/02/2035 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 17/04/2025 को प्रारंभ होकर 17/12/2027 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। अष्टम भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 12, 2, 4 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप पापकर्म में प्रवृत्त हो सकते हैं मगर दिखावा ऐसा करेंगे कि बहुत धार्मिक स्वभाव के हैं। विधवा स्त्रियों से संपर्क हो सकता है जिससे साख की क्षति होगी। दयालु होंगे मगर अप्रसन्न रहेंगे। प्रत्येक कदम उठाने से पूर्व गंभीर विचार आवश्यक है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार को प्रातःकाल पूजा के उपरांत बृहस्पति का मंत्र 99 बार पढ़कर दाहिने

हाथ की तर्जनी में धारण करें।

अंतर्दशा :- शुक्र - शनि
(17/12/2027 - 15/02/2031)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 15/02/2015 को प्रारंभ हुई थी और वद 15/02/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 17/12/2027 को प्रारंभ होकर 15/02/2031 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है।

अष्टम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 10, 2, 5 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

शनि आयुष्कारक है। अष्टम भाव में इसकी स्थिति बहुत शुभ मानी जाती है।

इस अवधि में आपको कई जिम्मेदारियां मिलेंगी जिन्हें आप धैर्य और परिश्रम से निबाहेंगे। मार्ग में कई बाधाएं आएंगी मगर आप उन्हें हिम्मत से पार कर लेंगे। दमे और श्वसन तंत्र के रोगों से बचाव करें। बेईमानी और निर्दयता से बचें।

अरिष्ट से बचाव के लिए नीलम सोने की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में, शनिवार को रात्रिभोज के बाद कच्चे दूध और गंगाजल से धोकर धारण करें।